शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कामायनी में भारतीय कालगणना का रूप

गजेन्द्र आर्य
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय कालगणना शाश्वत है। संसार की सारी कालगणनाओं से अधिक पुरानी कालगणना भारत में पायी जाती है। हमारे पास लाखों-करोड़ो वर्ष की कालगणना है। सृष्टि निर्माण से लेकर प्रलय तक की गणना मिलेगी। यह गणनाएं पंचाग में व्यवस्थित रूप से उल्लेखित रहती हैं। यज्ञ करने से पूर्व संकल्प लेते समय इसका उच्चारण किया जाता है। कामायनी में इस कालगणना का प्रत्यक्ष रूप है। इस शोध में आलेख कामायनी में अंतर्भुक्त कालगणना पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

कामायनी के काव्य में जलप्लावन की घटना प्रमुख है। इस घटना के घटित होने से ही कामायनी के कथानक का जन्म होता है। पूरा महाकाव्य जलप्लावन के बाद ही आगे बढ़ता है। जलप्लावन संसार की ऐसी घटना है, जिससे धरती पर पानी ही पानी हो गया था। हाहाकार मच गया था। जीवों की मृत्यु हो गयी थी। कुछ लोग बचे थे, जिनके द्वारा संसार का पुनरुत्थान हुआ। इस ऐतिहासिक जलप्लावन का वर्णन वैदिक साहित्य मैं प्रचुर मात्रा मे मिलता है। यह पुराणों में भी उपलब्ध है। पुराणों मे इतिहास छिपी है। जलप्लावन का प्रसंग विश्व के कोने कोने मे फैला हुआ है। भारतीय साहित्य ही नहीं कुरान शरीफ, बाइबिल, पारसी ग्रन्थ बेन्दीदार, बेबिलोनिया साहित्य, सुमेरियन साहित्य में भी प्रमाण मिल जायेंगे।

भारतीय कालगणना का रूप

कामायनी की घटना वैवस्तव मन्वन्तर की है। इस महाकाव्य का सृजन इसी मन्वन्तर पर केंद्रित है। इस मन्वन्तर मे पृथ्वी जलमग्न हुई। मनु बच गए। श्रद्धा से मिलन हुआ आदि प्रसंग इसी कालखंड मे घटित हुए। कामायनी की भूमिका मे उल्लेखित है कि यह घटना वैवस्तव मन्वन्तर में घटी। लेकिन वैवस्वत मन्वन्तर क्या है, वर्तमान में भारत में अंग्रेजी कालगणना स्थापित हो जाने से भारतीय कालगणना की ओर से लोगों का ध्यान हट गया।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।
नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन।
दूर-दूर तक विस्तृत था, हिम स्तब्ध उसी के हृदय सामान
नीरवता सी शिला चरण से टकराता फिरता पवमान।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तरुण तपस्वी सा वह बैठा साधन करता सुर-श्मशान]
नीचे प्रलयसिंधु लहरों का होता था सकरण अवसान।
कामायनी के प्रथम सर्ग 'चिंता' में जलप्लवन का उल्लेख है, एक पुरुष इस प्लावन से बच गया था, वह भीगे नेत्रों से उस प्रलय को देख रहा था, जल प्लावन की बात महाभारत में भी है-
आदित्ये सवितुर्ज्येष्ठे विवस्वान्जगृहे ततः।।
त्रेतायुगादौ च पुनविवस्वन्यानवे ददौ ।
मनश्च लोकभत्यर्थ सतायेक्ष्वाकवSददौ।।"[1]
जलप्लावन में जो पुरुष बचा था उसका नाम मनु था, इन्होंने सृष्टि का पुनः सृजन किया। "जलप्लावन भारतीय इतिहास में एक ऐसी ही प्राचीन घटना है, जिसने मनु को देवों से विलक्षण, मानवों की एक भिन्न संस्कृति प्रतिष्ठित करने का अवसर दिया।"[2] इस काल का नाम वैवस्वत मन्वतर था। यह सांतवा मन्वन्तर है। कामायनी इसी मन्वन्तर पर आधारित है। "श्रद्धा और मनु के सहयोग से मानवता के विकास की कथा को रूपक के आवरण में चाहे पिछले काल में मान लेने का वैसा ही प्रयत्न हुआ हो, जैसा कि सभी वैदिक इतिहास के साथ निरुक्त के द्वारा किया गया, किन्तु मन्वन्तर के अर्थात मानवता के नवयुग के प्रवर्तक के रूप में मनु की कथा आर्यों की अनुश्रुति दृढ़ता से मानी गयी है, इसलिए वैवस्वत मनु को ऐतिहासिक पुरुष ही मानना उचित है।"[3]
उसी तपस्वी से लंबे थे देवदारु दो चार खड़े]
हुए हिम-धवल, जैसे पत्थर बनकर ठिठुरे रहे अड़े।
अवयव की दृढ़ मांस -पेशियाँ, ऊर्जस्वित था वीर्य अपार
स्फीत शिराएँ, स्वस्थ रक्त का होता था जिनमें संचार।
चिंता-कांतर बदन हो रहा पौरुष जिसमे ओतप्रोत,
उधर उपेक्षामय यौवन का बहता भीतर मधुरमय स्रोत।
बंधी महावट से नौका थी सूखे मे अब पड़ी रही।
उत्तर चला था वह जल प्लवन और निकलने लगी महि।।
निकल रही थी मर्म वेदना करुणा विकल कहानी सी।
वहां अकेली प्रकृति सुन रही हँसती सी पहचानी सी।।
"इस मन्वन्तर के प्रवर्तक मनु हुए, मनु भारतीय इतिहास के आदि पुरुष थे, राम, कृष्ण और बुद्ध इन्ही। के वंशज है।"[4] ऊपर लिखित पंक्तियों में जयशंकर प्रसाद लिखते है कि इस मन्वन्तर के प्रवर्तक मनु हुए हैं। अब हमें जानना चाहिए कि मन्वन्तर किसे कहते हैं ? मन्वन्तर एक कालगणना है, जिसमें 306720000 वर्ष होते हैं। अब हमें भारतीय कालगणना को समझ लेना चाहिए-
1 निमेष = आँख झपकने का काल = 1.7 सैकंड
18 निमेष = 1 काष्ठा = 3.2 सैकंड
30 काष्ठा = 1 कला
30 कला = 1 मुहूर्त = 48.0 मिनट
30 मुहूर्त = 1 दिन = 24.0 घंटे
30 दिन = 1 मास
12 मास = 1 साल
100 वर्ष = 1 शताब्दी
सतयुग = 1728000 वर्ष
त्रेतायुग = 1296000 वर्ष
द्वापरयुग = 864000 वर्ष
कलियुग = 432000 वर्ष
1 मन्वन्तर = 306720000

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मन्वन्तर

1 स्वायम्भव

2 स्वारोचिष

3 औत्तमी

4 तामस

5 रैवत

6 चाक्षुष

7 वैवस्वत

एक मास के दो पक्ष होते हैं - कृष्णा पक्ष और शुक्ल पक्ष। कृष्ण पक्ष को अँधेरी रात और शुक्ल पक्ष को उजली रात कहते हैं। कृष्ण पक्ष प्रथमा से शुरू होकर अमावस्या पर समाप्त हो जाता है, तो पंद्रह दिन बीत जाते है। शुक्ल पक्ष प्रथमा से शुरू हो कर पूर्णिमा पर समाप्त होता है, तो शेष पंद्रह दिन बीतते हैं। चैत्र से नया वर्ष शुरू होता है और फाल्गुन में समाप्त होता है। इस प्रकार जो वर्ष बीतता है, वह विक्रम संवत में जुड़ता है। विक्रम संवत युगाब्ध में जुड़ता है, युग चतुर्युग में जुड़ेगा, फिर इकहत्तर चतुर्युग बीतेंगे तो एक मन्वन्तर होता है। मन्वन्तर सात होते हैं। अभी सातवां मन्वन्तर वैवस्वत चल रहा है।

"यहाँ एक बात स्पष्ट होनी चाहिए कि मन्वन्तर, अर्थात चतुर्युगी आदि केवल काल के विभाग हैं। इससे यह सिद्ध नहीं होता है कि किसी काल की विशेषता के कारण लोग धर्मात्मा अथवा पापी होते हैं।"[5]

निष्कर्ष

पाठक जब कामायनी पढ़ लेते हैं, तो उन्हें ज्ञात हो जाता है कि कितने सर्ग हैं, कितने पात्र हैं, कथानक कैसा है, भावपक्ष और कलापक्ष कैसा है ? तात्पर्य यह है कि पढ़ने वाला कामायनी की दार्शनिकता , उसके अंगिरस और उसकी ऐतिहासिकता से परिचित हो जाता है, परंतु वैवस्वत मन्वन्तर के काल से अपरिचित ही रहता है, जबकि वह उसमें उल्लेखित है। "अतः भारतीय जलप्लावन की कथा ऐतिहासिक एवं पौराणिक रूप से ही लिखी गयी है, जो भारत में होने वाली घटना का ही सत्य रूप है, क्योंकि हिमालय पर्वत का सर्वेक्षण करने वालों का विचार है कि इसके नीचे प्राचीन नगरों के अवशेष हैं, जो यहाँ पर किसी समय जलप्लावन की घटना होना सिद्ध करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 महाभारत, पूना संस्करण, गोरखपुर

2 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, कमल प्रकाशन नई दिल्ली

3 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, कमल प्रकाशन नई दिल्ली

4 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, कमल प्रकाशन नई दिल्ली

5 गुरुदत्त, इतिहास में भारतीय परंपराएं, कमल प्रकाशन

6 डॉ देशराज सिंह भाटी, अशोक प्रकाशन दिल्ली